A–0179

Total Pages : 3 **Roll No. .....**

MASL–503

M.A. Sanskrit (MASL)

(भारतीय दर्शन भाग-01)

Examination, June 2025

Time : 2:00 Hrs. Max. Marks : 70

नोट :— यह प्रश्न-पत्र सत्तर (70) अंकों का है, जो दो (02) खण्डों 'क' तथा 'ख' में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है। ***परीक्षार्थी अपने प्रश्नों के उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त (बी) उत्तर-पुस्तिका जारी नहीं की जायेगी।***

खण्ड–क

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न) 2×19=38

नोट :— खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **दो** (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. निम्नलिखित में किन्हीं **दो** की व्याख्या कीजिए–

   (क) घनच्छन्नदृष्टिर्घनच्छन्नचर्कं यथा मन्यतेनिष्पभ चातिमूढ़:।

   तथा बद्धवद्भाति या मूढ़ दृष्टे: स नितयोपलब्धिस्वरूपोऽहमात्मा॥

   (ख) अज्ञानस्यावरणविक्षेपनामकमस्ति शक्तिद्वयम्

   (ग) मूलप्रकृतिरविकृर्तिमहदाद्या: प्रकृतिविकृतय: सप्त

2. वेदान्तसार के अनुसार अज्ञान के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए उसकी 'आवरणशक्ति' पर प्रकाश डालिए।

3. प्रकृति पुरुष सम्बन्ध और सृष्टि प्रक्रिया समझाइए।

4. वेदान्तसारा के अनुसार कर्म के स्वरूप पर भेद सहित प्रकाश डालिए।

5. आवरण और विक्षेप शक्ति की समीक्षा कीजिए।

खण्ड–ख

(लघु उत्तरीय प्रश्न) 4×8=32

नोट :– खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **चार** (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. सांख्यकारिका के अनुसार 'पुरूषबहुत्व' सिद्ध कीजिए।

2. वेदान्तसार में वर्णित 'सूक्ष्म शरीर' के सिद्धान्त का विवेचन कीजिए।

3. पंचीकरण प्रक्रिया की विवेचना कीजिए।

4. 'तत्र अनुबन्धों नाम अधिकारिविषय सम्बन्धप्रयोजननानि'।

5. सांख्य के कारणविषयक सिद्धान्त को क्या कहते हैं ? व्याख्या कीजिए।

6. वेदान्तसार के अनुसार अज्ञान की परिभाषा देते हुए उसकी शक्तियों की व्याख्या कीजिए।

7. 'त्रिविधं प्रमाणमिष्टं प्रमेयसिद्धिः प्रमाणाद्धि' को स्पष्ट कीजिए।

8. वेदान्तसार के मंगलाचरण की व्याख्या कीजिए।

****